Daily Current Affairs

हम्पी का विरुपाक्ष मंदिर : इतिहास , महत्व और जीर्णोद्धार कार्य

चर्चा में क्यों ?

- हाल ही में कर्नाटक स्थित विरुपाक्ष मंदिर का एक हिस्सा अत्यधिक वर्षा के कारण ढह जाने से चर्चा में बना हुआ है।
- उल्लेखनीय है कि अत्यधिक वर्षा से हम्पी के विरुपाक्ष मंदिर का मंडप या सालू मंडप क्षतिग्रस्त हुआ है।
- तत्पश्चात कुछ संरक्षणवादियों ने भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) के अधिकारियों पर इसके संरक्षण में उपेक्षा का आरोप लगाया है।
- एएसआई के अनुसार मंदिर के मंडप सहित अन्य जीर्णोद्धार कार्य पहले से ही चल रहे थे। इसलिए संरक्षण में उपेक्षा का सवाल ही नहीं उठता।

विरुपाक्ष मंदिर मंडप के ढहने का कारण

- एएसआई अधिकारियों के अनुसार मंदिर के मंडप का निर्माण पत्थर के खंभों का उपयोग करके किया गया था जिस कारण इनकी नीव कमजोर है । अत: लंबे समय तक बारिश जैसी प्राकृतिक घटनाओं के कारण खंभों की स्थिति खराब हो गई है।

एएसआई द्वारा विरुपाक्ष मंदिर का पुनर्निर्माण

- हम्पी में राष्ट्रीय स्तर पर संरक्षित 95 स्मारकों में से 57 स्मारकों के लिए एएसआई जिम्मेदार है, जबकि बाकी राज्य सरकार के नियंत्रण में हैं।
- एएसआई द्वारा जीर्णोद्धार का काम यहां 2019 में शुरू हुआ था, जिसका पहला चरण 2019-20 के बीच पूरा हुआ और दूसरा चरण 2022-22 के बीच पूरा हुआ।

स्मारकों के जीर्णोद्धार में चुनौतियाँ

- एएसआई के अनुसार जीर्णोद्धार कार्य में उन्हें प्रमुखत: वित्तपोषण, रसद और मानव संसाधन से संबंधित मुद्दों का सामना करना पड़ रहा है। पिछले वित्तीय वर्ष में केंद्र सरकार ने विजयनगर से बीदर तक फैले कल्याण कर्नाटक क्षेत्र में स्मारकों के जीर्णोद्धार के लिए कुल 8 करोड़ रुपये ही आवंटित किए थे।
- इसके अलावा, पत्थर के खंभों को बदलने के लिए उसी तरह के पत्थर की आवश्यकता होती है जिसका इस्तेमाल शुरू में किया गया था और यह काम पारंपरिक तरीके से किया जाता है, जिसमें समय लगता है।

यूनेस्को विश्व विरासत स्थल :- हम्पी परिसर के स्मारकों को यूनेस्को द्वारा विश्व विरासत स्थल घोषित किया गया है। जिसमें विरुपाक्ष मंदिर भी शामिल है।

- इसके परिसर स्थल में अन्य मंदिर जैसे कृष्ण मंदिर परिसर, नरसिंह, गणेश, हेमकूट मंदिर समूह, अच्युतराय मंदिर परिसर, विठ्ठल मंदिर परिसर, पट्टाभिराम मंदिर परिसर, लोटस महल परिसर, आदि प्रमुख है ।
- हम्पी परिसर को विश्व का सबसे बड़ा खुला संग्रहालय भी कहा जाता है।
- उल्लेखनीय है कि हम्पी विजयनगर साम्राज्य की राजधानी थी

हम्पी का विरुपाक्ष मंदिर

पृष्ठभूमि :-विरुपाक्ष मंदिर मध्य कर्नाटक के हम्पी में 7 वीं शताब्दी का मंदिर है।

- यह विरुपाक्ष (भगवान शिव) को समर्पित मंदिर है। विरुपाक्ष को नागों का अधिष्ठाता माना जाता है।
- विरुपाक्ष मंदिर परिसर में भुवनेश्वरी और विद्यारण्य के मंदिर भी हैं।
- पहले इसे पम्पपति का मंदिर भी कहा जाता था ।
- ऐसा माना जाता है कि प्राचीनकाल में तुंगभद्रा नदी को पम्प और इसके तट पर स्थित मंदिर को पम्पपति का मंदिर कहते थे।
- कालान्तर में यही पम्पी शब्द हम्पी हो गया।

निर्माण :- विरुपाक्ष मंदिर के निर्माण के सम्बन्ध में अनेकों किंवदंतियां हैं। कुछ ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार इसका निर्माण लक्कन दंडेश की सहायता से किया गया था जो राजा परुआ देव राय द्वितीय के अधीन एक सेनापति था।

- हालाँकि 14वीं शताब्दी में विजयनगर साम्राज्य (1336 से 1646) के दौरान इसका व्यापक विस्तार हुआ और विरुपाक्ष मंदिर को प्रसिद्धि मिली।
- वर्तमान मंदिर का गोपुरम (मंदिर का कई मंजिला प्रवेश द्वार) 1442 में बनाया गया था।
- 1510 में इसमें एक और गोपुरम जोड़ा गया।
- मंदिर में जल की व्यवस्था के लिए तुंगभद्रा नदी से एक नहर निकाली गई है, जो मंदिर से होकर गुजरती है।
- मंदिर के दक्षिण में हेमकूट पर्वत है जहां अनेक जैन, दो देवी और अन्य मंदिर हैं। ये इस क्षेत्र के सबसे प्राचीन मंदिर हैं। विरुपाक्ष मंदिर के बाहर लकड़ी के दो रथ हैं। यही निकाली जाने वाली रथ यात्रा अपना विशेष महत्त्व रखती है।

परिसर स्थल :- विरुपाक्ष मंदिर परिसर तीन गोपुरों (टॉवर) से घिरा हुआ है।

- पूर्व की ओर स्थित मुख्य टॉवर एक भव्य संरचना है, जो 9 मंजिलों वाली, 50 मीटर ऊंची है, जिसे पंद्रहवीं शताब्दी में बनाया गया था।

Result Mitra

- पूर्वी टॉवर विरुपाक्ष मंदिर का मुख्य प्रवेश द्वार है।
- पूर्वी टॉवर में सैकड़ों हिंदू देवी-देवताओं की प्रतिमाओं के साथ इसकी प्रत्येक मंजिल पर व्यापक शिल्पकला है।
- मुख्य टॉवर की उलटी छाया मंदिर के अंदर एक दीवार पर पड़ती है।

स्थापत्य शैली :- यह मंदिर द्रविड़ वास्तुकला शैली का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

- इसकी विशेषता इसके भव्य गोपुरम (ऊंचे प्रवेश द्वार), गर्भगृह के ऊपर स्थित शिखर, इसकी जटिल नक्काशी और स्तंभों वाले हॉल हैं।

द्रविड़ वास्तुकला शैली :-

- दक्षिण भारत में इस शैली की शुरुआत का श्रेय पल्लव शासकों को दिया जाता है।
- इस शैली के अधिकांश मंदिर कृष्णा नदी से कन्याकुमारी के क्षेत्र तक विस्तारित हैं। वर्तमान में यह तमिलनाडु , कर्नाटक, केरल और आंध्र प्रदेश राज्यों में फैला हुआ है ।
- द्रविड़ शैली के मंदिर एक परिसर दीवार से घिरे रहते है।
- इस दीवार में एक प्रवेशद्वार होता है, जिसे गोपुरम के नाम से जाना जाता है ।
- विमान: विमान मंदिर के गर्भगृह (गर्भगृह) के ऊपर एक विशाल, पिरामिड जैसी संरचना है। विमान आमतौर पर जटिल नक्काशी, मूर्तियों से सुसज्जित होते हैं और अक्सर कई स्तरों (सीढ़ी नुमा पिरामिड) वाले होते हैं।

मंडप: द्रविड़ मंदिरों में खंभों वाले हॉल होते हैं जिन्हें मंडप कहा जाता है, जिनका उपयोग धार्मिक अनुष्ठानों, समारोहों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों सहित विभिन्न उद्देश्यों के लिए किया जाता है।

- मंडपों की विशेषता जटिल नक्काशीदार खंभे और छत हैं, जो हिंदू पौराणिक कथाओं के दृश्यों को प्रदर्शित करते हैं।

शिखर: शिखर नुकीली, पिरामिडनुमा छत या शिखर है जो विमान के ऊपर होता है। इसे अक्सर छोटे-छोटे मंदिर, मूर्तियां और विस्तृत कलश जैसे सजावटी तत्वों से सजाया जाता है।गोष्टम: गोष्टम गर्भगृह की बाहरी दीवारों पर बने आलों में उकेरे गए देवता हैं। वे आम तौर पर मंदिर के मुख्य देवता से जुड़े होते हैं और ईश्वर के विभिन्न पहलुओं या रूपों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (एएसआई)

राष्ट्र की सांस्कृतिक विरासतों के पुरातत्त्वीय अनुसंधान तथा संरक्षण के लिये एक प्रमुख संगठन

स्थापना :- 1861 में ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार द्वारा

एएसआई के पहले महानिदेशक अलेक्जेंडर कनिंघम द्वारा

मुख्यालय :- नई दिल्ली

प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्त्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958 के प्रावधानों के अनुसार, यह देश में सभी पुरातत्त्वीय गतिविधियों को विनियमित

संस्कृति मंत्रालय के अधीन कार्य

विजय नगर साम्राज्य

स्थापना :- 1336 में हरिहर (हक्का) और उनके भाई बुक्का राय ने

नामकरण :- इसकी राजधानी विजयनगर के नाम पर जो आधुनिक भारत के कर्नाटक में हम्पी के नाम से प्रसिद्ध ।

प्रमुख राजवंश (कुल 4) :- संगमा राजवंश , सलुवा राजवंश , तुलुवा राजवंश , अरविडु राजवंश

Result Mitra

1. संगमा राजवंश (1336 - 1487 ई)

प्रथम शासक - हरिहर प्रथम (देव राय)

अंतिम - राजशेखर 1486-1487

2. सलुवा राजवंश (1490 - 1567)

प्रथम शासक - नरसिंह

अंतिम - सदाशिव (राम राय के हाथों का कठपुतली शासक)

3. तुलुव राजवंश (1565 - 1614)

प्रथम राज्याभिषेक शासक - तिरुमाला

अंतिम - वेंकट प्रथम

4. अरविडु राजवंश (शासन तिथि के संबंध में स्पष्ट जानकारी नहीं)

प्रमुख शासक :- रंगा और वेंकट

Result Mitra